्सं० म्रो० वि०/एफ. डी./94-87/10320.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० विकटर केव्लज 14/1, मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री विजय सिंह, पुत्र श्री भागवत सिंह मार्फत श्री सुरजवली यादव, गोल्डन पो इण्ड० 14 माईल स्टोन, मथुरा रोड़, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में भौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद की न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद ग्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिमूचना संव 5415—3—श्रा 15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए प्रधिमूचना संव 11495—जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, द्वारा उनत अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम त्यायालय, परीदाबाद को धिवादग्रस्त या उससे मुसंव उससे सम्बन्धित नीखे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उदत प्रत्या श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या की विजय सिंह की सेवा समापन की गई है या उसने स्वयं गैरहाजिर हो कर नौकरी से पुर्नग्रहणा (लियन) खोया है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप बाह्न किस राहत का हकदार है ?

सं शिविशिष्ण विश्व हिंदियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वि विवस प्राथमिक स भूमि विकास बैंक लिंव, शाखा पलवल, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री यशवन्त राय, पुत्र श्री राम चन्द्र, मार्फत एस. सी. श्री वास्तव एड 5-सी, 52 एन. ग्राई. टी., फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद धीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेनु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रधान की गई श का प्रथोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी 1958 द्वारा उक्त अधि की घारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेसु निदिश्ट करते हैं जो कि उनत प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो जिला मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री यशवन्त राय की सेवाझों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकद सं. भ्रो. वि. /एफ०डी०/130-86/10334.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० हित इन्जीति प्लाट नं० 28 सैक्टर 25 बल्लबगढ़, (फरीदाबाद) के श्रीमक महा सचिव हिन्द मजदूर सभा 29 शहीद चौक फरीदाबाद, उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायिनणय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की शिन्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 क के ग्रधीन गठित श्रौद्योगिक ग्रिधिक हिरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिदिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/माम श्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामलों हैं, न्यायनिर्णय एवं पंचाट छः मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या प्रबन्धकों द्वारा की गई तालाबन्दी उचित है ? यदि नहीं, तो श्रामिक किस राहत का हकदार है ?

पं अो विष्णुएफ की ०/4-86/ 10345.--चूं कि हरियाणा के राण्यपाल की राय है कि मैं० टोपाज भोवरसीज प्राठ विश्व 24-वी 4/5, इन्डस्ट्रीयल एरिया फरीदाबाद, के अमिक श्री राजनारायण, मार्फत भारतीय मजदूर संघ नीलम बाटा रोड़, विश्व भवन, फरीदाबाद सथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

धौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिष्ठितियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान कं शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिष्ठिस्त्वना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिष्ठिस्त्वना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिष्ठिक की घारा 7 के श्रियोन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा माम्यायिनणंय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त भामला है विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या की राजनारायण, पुत, श्री मातादीन की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं त्याग पत दें कर नौकरी। है ? इन बिन्दु पर निर्णय के फन्नस्वरूप यह किन राहन का हुक सर है ?